# फलोत्पादन की समस्याएं तथा संभावनाएं विकासखण्ड रामगढ के विशेष सन्दर्भ में

**[1]Mahendra Singh & [2]Urvashi Bisht**
[1]Research Scholar, Dept. of Geography, S.S.J. Campus, Almora, Kumaun University.
[2] B.ed Student, Kumaun University.

Received: January 24, 2019 Accepted: March 01, 2019

***ABSTRACT:*** *प्रस्तुत शोध कार्य में जनपद नैनीताल के विकासखण्ड रामगढ़ में फलोत्पादन की समस्याओं तथा संभावनाओं को समझने का प्रयास किया गया है। बागवानी कृषि की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो फल, फूल, सब्जी तथा सजावटी पौधों तथा अन्य कृषि फसलों के कृषि क्रिया, उत्पादन, प्रसंस्करण तथा विपणन से सम्बन्धित विज्ञान है। बागवानी एक व्यापक विषय है जिसमें कृषि की कई शाखाओं का अध्ययन किया जाता है। बागवानी विकास के लिए ज्ञान, कौशल तथा तकनीकी का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। बागवानी फसलों को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित किया जाता है जो फल, फूल तथा सब्जी हैं। विकासखण्ड रामगढ़ कुमाऊँ हिमालय के शिवालिक श्रेणी में अवस्थित है जहां शीतोष्ण कटिबन्धीय जलवायु पायी जाती है जो फलोत्पादन के लिये अनुकूल है। बागवानी में मुख्यतः नकदी फसलों का उत्पादन किया जाता है जो ग्रामीण कृषकों के आय का मुख्य स्रोत है तथा उनके जीवन स्तर को बढाने में सहायक है। रामगढ़ विकासखण्ड के ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय फलोत्पादन है इसके साथ–साथ दुग्ध उत्पादन तथा पशुपालन का कार्य भी करते हैं। फलोत्पादन में मुख्यतः सेब, आड़ू, नींबू, खुमानी, अखरोट आदि फलों का उत्पादन किया जाता है। बागवानी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार है। बागवानी के विकास के लिए अवसंरचनात्मक विकास जैसे परिवहन के लिये सड़क तथा फलों को खराब होने से बचाने के लिये शीत भण्डार की आवश्यकता अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है।*

***Key Words:*** *बागवानी विकास, फलोत्पादन, प्रसंस्करण, तकनीकियाँ, अवसंरचनात्मक विकास तथा विपणन।*

## 1.प्रस्तावना:

बागवानी कृषि की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसमें फसल उत्पादन, उनका प्रसंस्करण तथा व्यापार सम्मिलित है। बागवानी एक नकदी आधारित कृषि क्रिया है जिसमें फसलों की बुआई, रोपण, सिंचाई, खाद, कर्षण, कलम लगाना, तथा छटाई आदि क्रिया सम्मिलित हैं। विकासखण्ड रामगढ़ शीतोष्ण कटिबन्धीय जलवायु पेटी में अवस्थित है जहाँ शीतोष्ण कटिबन्धीय फलों का उत्पादन किया जाता है।

बागवानी प्राचीन काल से भारतीय कृषि तंत्र तथा अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। वर्तमान समय में बागवानी ने व्यावसायिक रूप ग्रहण कर लिया है। फल के उत्पादल में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है तथा विश्व के कुल फल उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 10 प्रतिशत की है। सन 2015–16 में भारत में फलों का कुल उत्पादन 90183 हजार टन रहा। भारत जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का दूसरा तथा क्षेत्रफल की दृष्टि से सातवाँ सबसे बडा देश है। NSSO (National Sample Survey Organisation) प्रतिवेदन 2011–12 के अनुसार देश की 48.9 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है। सन 2002–03 में बागवानी के अन्तर्गत आने वाला कुल क्षेत्रफल 16.4 मिलियन हेक्टेयर था जो सन 2005–06 में बढकर 20 मिलियन हेक्टेयर हो गया जो कुल कृषित क्षेत्र (Cropped area) का लगभग 12 प्रतिशत था। 2005–06 में बागवानी क्षेत्र का कुल उत्पादन 184.9 मिलियन टन रहा जो 2012–13 में बढ़कर 265 मिलियन टन हो गया। बागवानी का कृषकों के आय तथा राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान की संभाव्यता को दृष्टि में रखते हुए भारत सरकार ने बागवानी के विकास के लिए विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से भिन्न–भिन्न बागवानी विकास की योजनाओं को प्रस्तुत किया। सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली योजना सन 2005 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के नाम से प्रस्तुत किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य बागवानी को प्रोत्साहित करना तथा कृषकों के आय में वृद्धि करना है।

उत्तराखण्ड भारत का एक हिमालयी राज्य है। उत्तराखण्ड में बागवानी का विकास वृहद स्तर पर किया गया है। राज्य में बागवानी के विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। उत्तराखण्ड राज्य में उष्ण, उपोष्ण तथा शीतोष्ण प्रकार की जलवायु पायी जाती है। अतः यहाँ उष्ण, उपोष्ण तथा शीतोष्ण कटिबन्धीय फलों का उत्पादन किया जाता है। 2017–18 में राज्य में फलों का कुल उत्पादन 669944.74 मीट्रिक टन रहा तथा वहीं फलोत्पादन के अन्तर्गत आने वाला कुल क्षेत्रफल 178661.94 हेक्टेयर रहा **(स्रोत– उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण, उत्तराखण्ड चौबटिया)**। उत्तराखण्ड में फलोत्पादन के अन्तर्गत मुख्य फल सेब, नाशपाती, आड़ू, खुमानी, प्लम, अखरोट, नींबू, आम, लीची, आँवला आदि फलों का उत्पादन किया जाता है।

रामगढ़ जनपद नैनीताल का एक विकासखण्ड है जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्यता के लिये विश्व विख्यात है। रामगढ़ में फलोत्पादन बड़े स्तर पर किया जाता है। रामगढ के लोगों का मुख्य व्यवसाय फलोत्पादन है। यहाँ की जलवायविक दशाएं फलोत्पादन के लिये अनुकूल हैं। अतः यहाँ अन्य निकटवर्ती क्षेत्रों से अधिक फलोत्पादन किया जाता है। यहाँ फलों में मुख्यतः सेब, आड़ू, प्लम, खुमानी, नींबू, नाशपाती आदि का उत्पादन किया जाता है।

**2.अध्ययन क्षेत्रः**

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र कुमाऊँ हिमालय की शिवालिक पहाडियों में अवस्थित है। रामगढ़ जनपद नैनीताल का एक विकासखण्ड है जो भौगोलिक रूप से 29°36'8'' उत्तरी अक्षांश से 29°38' उत्तरी अक्षांश के मध्य तथा 79°51'3'' पूर्वी देशान्तर से 79°72'5'' पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित है (**चित्र–1.1**) जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1789 मीटर है। विकासखण्ड रामगढ़ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 142 वर्ग किलोमीटर है। विकासखण्ड रामगढ़ के पूर्व में ध्यारी तहसील, पश्चिम में नैनीताल तहसील, उतर में बेतालघाट तहसील तथा दक्षिण में भीमताल तहसील स्थित है।

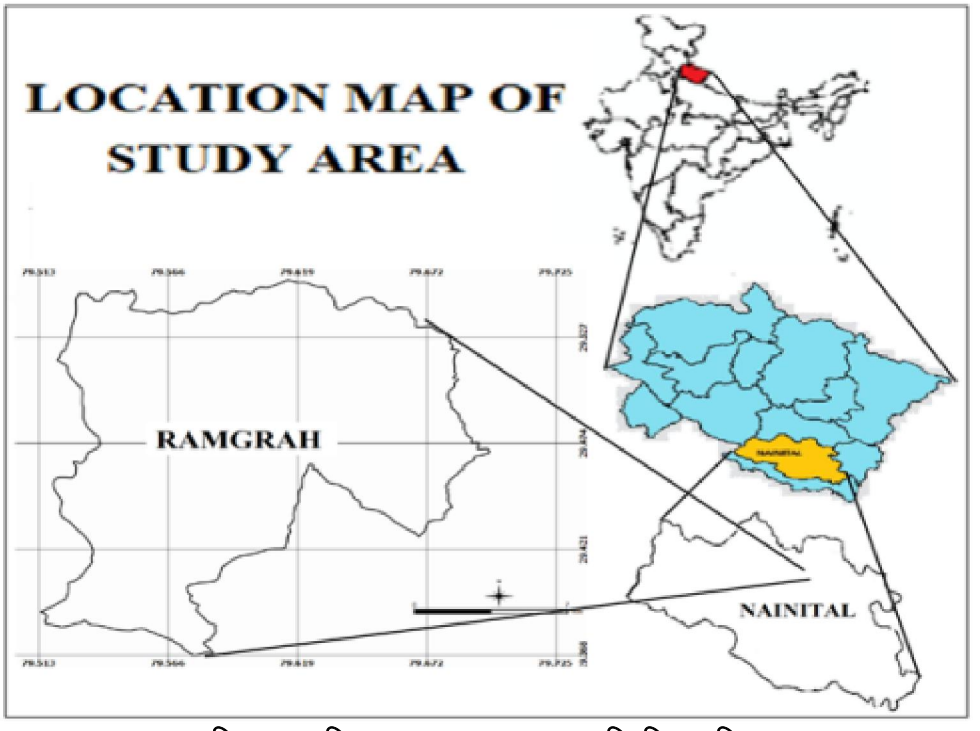


**चित्र 1.1 : विकासखण्ड रामगढ़ का अवस्थिति मानचित्र**

विकासखण्ड रामगढ़ के उच्चावच में विभिन्नता पायी जाती है जो 1400 से 1789 मीटर के बीच बिषमता लिए हुए है। यहाँ दो ऋतुऐं देखने को मिलती हैं ग्रीष्म ऋतु व शीत ऋतु। यहाँ ग्रीष्म ऋतु में औसत तापमान लगभग 12°–21° सेग्रे० तथा शीत ऋतु में 2°–10° सेग्रे० अंक्ति किया जाता है। विकासखण्ड रामगढ़ में औसत वार्षिक वर्षा लगभग 120–130 सेमी० अंक्ति की जाती है। यहाँ वर्षा मुख्यतः दो ऋतुओं से प्राप्त की जाती है वर्षा ऋतु/मानसूनी वर्षा तथा शीतकालीन वर्षा। शीतकालीन वर्षा के दौरान यहाँ वर्षण हिम के रूप में होता है जो मृदा में नमी को बढाता है तथा कृषि से सम्बन्धित बिमारियों को खत्म कर देता है। विकासखण्ड रामगढ़ में यहाँ अवसादी चट्टानों की बहुलता पायी जाती है। यहाँ पर्वतीय प्रकार की मृदा पायी जाती है जो स्वभाव से कम उपजाऊ होती है। इस मृदा का गठन मोटा, रंग भूरा तथा भूमिगत जल की मात्रा कम होती है। इस मृदा में मोटे अनाज तथा फलों का उत्पादन किया जाता है। यहाँ की मृदा मुख्यतः फलोत्पादन में उपयोगी है। उत्तराखंड के दक्षिणी पाद प्रदेश तराई–भाबर से लेकर हिमाच्छादित क्षेत्रों तक क्रमशः उष्ण, उपोष्ण शीपोष्ण एवं अल्पाइन जलवायु की पेटी पायी जाती है। इन जलवायु पेटियों में उपोष्ण, शीतोष्ण तथा अल्पाइन वनस्पति पायी जाती है। उच्चावच विषमता, ढ़ाल की दिशा, भूगर्भिक संरचना, मृदा, वर्षा, तापमान, आर्द्रता आदि में स्थानिक विषमता के कारण वनस्पतियों के स्थानिक वितरण में भी विषमता पायी जाती है। यहाँ सेमल, ऑवला, हरड, देवदार, बॉज, चीड़, बॉस, साल, नीली, रिंगाल आदि वनस्पति मिलती है।

रामगढ़ दो भागों में विभाजित है– एक भाग ऊँचाई पर स्थित है जिसे मल्ला रामगढ़ कहते हैं तथा दूसरा ढ़लान पर स्थित है जिसे तल्ला रामगढ़ के नाम से जाना जाता है। रामगढ़ विकासखण्ड में सेब, आड़ू, खुमानी, प्लम, नाशपाती, नींबू, अखरोट आदि फलों का उत्पादन किया जाता है जिस कारण इसे **"कुमाऊँ का फल का कटोरा"** भी कहा जाता है।

2011 की जनगणना के अनुसार रामगढ़ विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 39830 है। जिसमें से 20423 पुरूष तथा 19407 महिलाएँ हैं। रामगढ़ विकासखण्ड में 0–6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 5336 हैं, जिसमें से 2819 लड़के तथा 2517 लड़कियाँ हैं। रामगढ़ विकासखण्ड में अनुसूचित जाति की जनसंख्या 13265, अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 107 तथा पिछडा वर्ग की जनसंख्या 338 है। रामगढ़ विकासखण्ड की कुल साक्षरता दर 74 प्रतिशत है। कुल जनसंख्या 39830 में से 29709 व्यक्ति शिक्षित हैं। पुरूषों की साक्षरता दर 81 प्रतिशत तथा महिलाओं की साक्षरता दर 67 प्रतिशत है। कुल 20423 में से 16624 पुरूष शिक्षित हैं तथा कुल 19407 में से 13085 महिलाएं ही साक्षर हैं। **(स्रोत– जनगणना 2011 )**

**3.अध्ययन का उद्देश्यः**

1. विकासखण्ड रामगढ़ में फलोत्पादन के विकास का अध्ययन करना।
2. विकासखण्ड रामगढ़ में फलोत्पादन में प्रयोग होने वाली तकनीकियों का अध्ययन करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में फल उत्पादन से सम्बन्धित समस्याओं को उजागर करना।
4. अध्ययन क्षेत्र में फलोत्पादन की सम्भावनाओं का अध्ययन करना।
5. फलोत्पादन को बढाने के लिए उचित सुझाव प्रस्तुत करना।

**4.किया–विधिः**

प्रस्तुत शोध पत्र को पूर्ण करने के लिये प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकडों का प्रयोग किया गया है। जिसके लिये जिला उद्यान विभाग नैनीताल तथा विकासखण्ड उद्यान विभाग रामगढ़ से फल उत्पादन से सम्बन्धित आँकडो को एकत्र किया गया है। इसमें साक्षात्कार एवं सर्वेक्षण विधि का भी प्रयोग किया गया है। माइक्रोसाफ्ट वर्ड, माइक्रोसाफ्ट एक्सल तथा पेंटिंग व एन0 आर0 डी0 एम0 एस0 अल्मोड़ा का सहयोग मानचित्र व तालिका निर्माण में लिया गया है।

**5.परिणाम व विश्लेषणः**

**अध्ययन क्षेत्र का भूमि उपयोग प्रतिरूपः**

**तालिका 1.1: विकासखण्ड रामगढ़ का भूमि उपयोग प्रतिरूप**

| क्रम0स0 | विवरण | क्षेत्रफल(वर्ग किमी0) |
|---|---|---|
| 1. | कुल भौगोलिक क्षेत्रफल (वर्ग मी0) | 142 |
| 2. | बागवानी | 56 |
| 3. | वन | 49 |
| 4. | आबादी / गौचर (बंजर) भूमि | 35 |

**स्रोत : रामगढ़ विकासखण्ड कार्यालय, 2017**

रामगढ़ विकासखण्ड का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 142 वर्ग किमी0 है जिसमें से 56 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में बागवानी की जाती है तथा 49 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र वनस्पति के अन्तर्गत सम्मिलित है तथा शेष 35 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में बंजर भूमि व आबादी सम्मिलित है। रामगढ़ विकासखण्ड में अधिकांश भूमि पर बागवानी की जाती है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 40 प्रतिशत है। यहाँ 35 प्रतिशत भाग पर वनों का विस्तार पाया जाता है तथा शेष 25 प्रतिशत भाग पर आबादी, बंजर भूमि तथा अन्य कार्यों को सम्पन्न किया जाता है **(तालिका 1.1)**।

**विकासखण्ड रामगढ़ में फलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल तथा उनका उत्पादनः**

**तलिका 1.2 : विकासखण्ड रामगढ़ में फलों के अन्तर्गत क्षेत्रफल व उत्पादन का विवरण**

| | | सेब | | आड़ू | | प्लम | | खुमानी | | नींबू प्रजाति | | नाशपाती | | कुल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| क्रम | वर्ष | क्षेत्रफल | उत्पादन | क्षेत्रफल | उत्पादन | क्षेत्रफल | उत्पादन | क्षेत्रफल | उत्पादन | क्षेत्रफल | उत्पादन | क्षेत्रफल | उत्पादन | उत्पादन |
| 1 | 2007-2008 | 3904 | 14250 | 773 | 3355 | 309 | 1370 | 260 | 730 | 140 | 434 | 433 | 3853 | 23992 |
| 2 | 2008-2009 | 3904 | 14640 | 812 | 3654 | 324 | 1428 | 260 | 730 | 141 | 458 | 434 | 3906 | 24816 |
| 3 | 2009-2010 | 3905 | 15030 | 814 | 3776 | 325 | 1436 | 260 | 782 | 142 | 468 | 434 | 4557 | 26049 |
| 4 | 2010-2011 | 3906 | 152334 | 838.42 | 394098 | 331.52 | 1491.75 | 261 | 795 | 142 | 482.8 | 435 | 4611 | 26554.93 |
| 5 | 2011-2012 | 3906 | 15256 | 850 | 4439.5 | 332 | 1562.4 | 262 | 870 | 142 | 584 | 435 | 5243 | 27955.15 |
| 6 | 2012-2013 | 3906 | 15256 | 860 | 4489.75 | 332 | 1569.4 | 262 | 880 | 142 | 584 | 435 | 5243 | 28022.15 |
| 7 | 2013-2014 | 3910.3 | 15261 | 864.2 | 4565 | 334.2 | 1573 | 262.2 | 880 | 142.1 | 584 | 435.2 | 5243 | 28106 |
| 8 | 2014-2015 | 3910.7 | 15361 | 865.3 | 4566 | 334.5 | 1573.5 | 262.5 | 881.4 | 142.2 | 584.2 | 435.2 | 5243 | 28209.1 |
| 9 | 2015-2016 | 673.79 | 3715.2 | 1138 | 189204 | 225.14 | 2710.2 | 202.218 | 1512.524 | 53.38 | 367.724 | 169.26 | 2480.04 | 29706.088 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16 (क्षेत्रफल हे0 में तथा उत्पादन मी0 टन में)**

विकासखण्ड रामगढ़ के ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय फलोत्पादन है। यहां फलोत्पादन कुल भूमि के 40 प्रतिशत भाग पर किया जाता है। विकासखण्ड रामगढ़ में सन 2007–08 में फलोत्पादल के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल 5819 हेक्टेयर था वहीं कुल फलोत्पादन 23992 मीट्रिक टन था। सन 2015–16 में फलोत्पादन के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल घटकर 2460 हेक्क्टेयर हो गया तथा वहीं कुल फल उत्पादन 29706.088 मीट्रिक टन रहा। यदि विगत 9 वर्षों (2007–08 – 2015–16) के फलोत्पादन के अन्तर्गत सम्मिलित कुल क्षेत्रफल तथा कुल उत्पादन को देखें तो इस दौरान क्षेत्रफल में भारी कमी देखी गयी है। सन 2007–08 से 2015–16 के बीच फलोत्पादन के कुल क्षेत्रफल में 2356 हेक्टेयर की कमी देखी गयी है।

विकासखण्ड रामगढ़ में अधिकांश फलों के क्षेत्रफल में कमी हुई है जैसे सेब उत्पादन के अन्तर्गत सन 2007–08 में कुल क्षेत्रफल 3904 हेक्टेयर था वहीं 2015–16 में यह घटकर 673.79 हेक्टेयर ही रह गया। इसी प्रकार प्लम उत्पादन के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल सन 2007–08 में 309 हेक्टेयर था जो 2015–16 में घटकर 225.14 हेक्टेयर रह गया है। यहां आडू एकमात्र फसल है जिसके क्षेत्रफल में वृद्धि देखी गयी है जो 2007–08 में 773 हेक्टेयर से बढकर 2015–16 में 1138 हेक्टेयर हो गया है **(तालिका 1.2)**।

**प्रमुख फल एवं उनके अन्तर्गत क्षेत्रफल व उत्पादनः** विकासखण्ड रामगढ़ के प्रमुख फलों के उत्पादन को निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख फलों के रूप में सेब, खुमानी, प्लम, आडू तथा नाशपाती को लिया गया है।

**सेब उत्पादनः**

**तालिका 1.3 : विकासखण्ड रामगढ़ में सेब उत्पादन का विवरण**

| क0स0 | विकासखड | वर्ष | सेब क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 3904 | 14250 | 3.65 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 3904 | 14640 | 3.75 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 3905 | 15030 | 3.84 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 3906 | 15233.4 | 3.9 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 3906 | 15256 | 3.9 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 3906 | 15256 | 3.9 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 3910.3 | 15261 | 3.9 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 3910.7 | 15361 | 3.92 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 673.79 | 3715.2 | 5.51 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.3 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि विकासखड़ रामगढ़ में सेब उत्पादन की मात्रा निरन्तर तेज गति से घटती जा रही है। यहाँ वर्ष 2010–2011 से 2012–13 तक समान क्षेत्रफल में उत्पादन देखने को मिला है तथा इन वर्षों में सेब उत्पादन भी समान ही रहा है। वर्ष 2015–16 में सेब के क्षेत्रफल में भारी गिरावट दर्ज की गई तथा इसके साथ–साथ उत्पादन में भी कमी देखने को मिली है। इसका कारण उस क्षेत्रफल में किये गये कीटनाशक दवाइयों का प्रयोग, मृदा ह्रास, उर्वरता में कमी है जिसके कारण भूमि को कुछ समय के लिए परती छोड दिया जाता है। इससे क्षेत्रफल में कमी देखने को मिली है। वर्ष 2013–14 तथा 2014–15 में समान क्षेत्रफल दर्ज किया गया है तथा 2007–08 तथा 2008–09 में भी क्षेत्रफल समान पाया गया है किन्तु उत्पादन में अन्तर देखने को मिला है **(तालिका 1.3)**।

**आडू उत्पादनः**

**तालिका 1.4 : विकासखण्ड रामगढ़ में आडू उत्पादन का विवरण**

| क0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 773 | 3355 | 4.34 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 812 | 3654 | 4.5 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 814 | 3776 | 4.63 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 838.42 | 3940.98 | 4.7 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 850 | 4439.75 | 5.22 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 860 | 4489.75 | 5.22 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 864.2 | 4565 | 5.28 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 865.3 | 4566 | 5.27 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 1138 | 18920 | 16.62 |

**स्रोतः जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.4 के विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि 2015–16 में विगत वर्षों की तुलना में आडू का उत्पादन अधिक हुआ है जो कि 18920 मी0 टन है तथा इसकी उत्पादकता 16.62 दर्ज की गई है। इसके उत्पादन में वृद्धि का कारण कृषि क्षेत्रफल में वृद्धि तथा मौसम का अनुकूल होना है। इसके पश्चात 2011–12 तथा 2012–13 में उत्पादकता समान दर्ज की गई है । इसका कारण आडू का भौगोलिक दशाओं के अनुकूल होना है। विकासखड रामगढ़ में आडू उत्पादन की मात्रा निरन्तर धीमी गति से बढ़ रही है। वर्ष 2015–16 में भी उत्पादन तथा क्षेत्रफल में वृद्धि देखने को मिली है **(तालिका1.4 )**।

**प्लम उत्पादनः**

**तालिका 1.5 : विकासखण्ड रामगढ़ में प्लम उत्पादन का विवरण**

| क्र0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 309 | 1370 | 4.43 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 324 | 1428 | 4.4 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 325 | 1436 | 4.41 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 331.52 | 1491.75 | 4.49 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 332 | 1562.4 | 4.7 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 332 | 1569.4 | 4.72 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 334.2 | 1573 | 4.7 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 334.5 | 1573.5 | 4.7 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 225.14 | 2710.2 | 12.03 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.5 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि वर्ष 2015–16 में कुल प्लम उत्पादन 2710.200 (मी०टन) हुआ इसका कुल क्षेत्रफल 225.140 (है०) है। वर्ष 2015–16 में उत्पादन में बढ़ोतरी हुई है परन्तु क्षेत्रफल में गिरावट देखने को मिली है। इसका कारण कम क्षेत्र में अधिक उत्पादन होना है। प्लम की उत्पादकता वर्ष 2015–16 में 12.03 दर्ज की गई है। वर्ष 2013–14 तथा 2014–15 में भी उत्पादकता 4.70 दर्ज की गई है और यह उत्पादकता इन दो वर्षों में समान रही है **(तालिका 1.5)** ।

**खुमानी उत्पादनः**

**तालिका 1.6 : विकासखण्ड रामगढ़ में खुमानी उत्पादन का विवरण**

| क्र0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 260 | 730 | 2.8 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 260 | 730 | 2.8 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 260 | 782 | 3 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 261 | 795 | 3.04 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 262 | 870 | 3.32 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 262 | 880 | 3.35 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 262 | 880 | 3.35 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 262 | 881.4 | 3.35 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 202.218 | 1512.524 | 7.47 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.6 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि वर्ष 2007–08 व 2008–09 में क्षेत्रफल व उत्पादन में कोई बदलाव नही हुआ है। वर्ष 2011–15 तक क्षेत्रफल में कोई बदलाव नहीं आया है परन्तु उत्पादन में प्रत्येक वर्ष बढ़ोतरी दर्ज की गई है। खुमानी का क्षेत्रफल 2015–16 में घटकर 262 हेक्टेयर से 202.218 हेक्टेयर हो गया तथा उत्पादन बढ़कर 881 मी0 टन से 1512.524 मीट्रिक टन हो गया। सन 2015–16 में खुमानी की उत्पादकता दर 7.47 दर्ज की गयी **(तालिका 1. 6)**।

**नाशपाती उत्पादनः**

**तालिका 1.7 : विकासखण्ड रामगढ़ में नाशपाती उत्पादन का विवरण**

| क्र0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0 टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 433 | 3853 | 8.89 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 434 | 3906 | 9 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 434 | 4557 | 10.5 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 435 | 4611 | 10.6 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 435 | 5243 | 12.05 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 435 | 5243 | 12.05 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 435.2 | 5243 | 12.04 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 435.2 | 5243.4 | 12.04 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 169.26 | 2480.04 | 14.65 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.7 का विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि वर्ष 2015–16 में विगत वर्षों की तुलना में नाशपाती के क्षेत्रफल व उत्पादन में गिरावट दर्ज की गई है परन्तु उत्पादकता में दो अंक की वृद्वि हुई है। वर्ष 2012–2015 तक फलों का उत्पादन एवं क्षेत्रफल समान रहें हैं। वर्ष 2008–09 तथा 2009–10 में नाशपाती के क्षेत्रफल में समानता देखने को मिली है परन्तु उत्पादन में भिन्नता दर्ज की गई है **(तालिका 1.7)**।

**नींबू उत्पादनः**

**तालिका 1.8 : विकासखण्ड रामगढ़ में नींबू उत्पादन का विवरण**

| क0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मी0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 140 | 434 | 3.1 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 141 | 458 | 3.24 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 142 | 468 | 3.29 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 142 | 482 | 3.4 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 142 | 584 | 4.11 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 142 | 584 | 4.11 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 141.1 | 584 | 4.1 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 142.2 | 584.2 | 4.1 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 53.38 | 367.724 | 6.88 |

**स्रोत : जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.8 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विकासखड रामगढ़ में नींबू उत्पादन तथा उनका उत्पादन क्षेत्र निरन्तर धीमी गति से घटता जा रहा है। सन 2007–08 में नींबू उत्पादन 434 मी0 टन तथा उत्पादन क्षेत्र 140 हेक्टेयर था वहीं 2015–16 में इसका उत्पादन घटकर 367 मी0 टन तथा उत्पादन क्षेत्र 53.38 हेक्टेयर हो गया है। वर्ष 2011–12 से 2014–15 में क्षेत्रफल व उत्पादन दोनों समान रहे हैं **(तालिका 1.8)**।

**अखरोट उत्पादनः**

**तालिका 1.9 : विकासखण्ड रामगढ़ में अखरोट उत्पादन का विवरण**

| क0स0 | विकासखड | वर्ष | क्षेत्रफल(हेक्टे) | उत्पादन(मै0टन) | उत्पादकता |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | रामगढ़ | 2007-2008 | 365 | 175 | 0.479 |
| 2 | रामगढ़ | 2008-2009 | 365 | 175 | 0.47 |
| 3 | रामगढ़ | 2009-2010 | 365 | 176 | 0.48 |
| 4 | रामगढ़ | 2010-2011 | 365 | 177 | 0.48 |
| 5 | रामगढ़ | 2011-2012 | 365 | 178 | 0.48 |
| 6 | रामगढ़ | 2012-2013 | 295 | 178 | 0.6 |
| 7 | रामगढ़ | 2013-2014 | 295.5 | 179 | 0.6 |
| 8 | रामगढ़ | 2014-2015 | 295.5 | 179 | 0.6 |
| 9 | रामगढ़ | 2015-2016 | 15.44 | 78.623 | 5.09 |

**स्रोत :–जिला उद्यान कार्यालय नैनीताल, 2007–16**

तालिका 1.9 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि विकासखड रामगढ़ में वर्ष 2007–08 से 2011–12 तक अखरोट का क्षेत्रफल समान रहा है तथा उत्पादन की मात्रा निरन्तर धीमी गति से बढ रही है। वर्ष 2012–13 से 2014–15 तक क्षेत्रफल में गिरावट दर्ज की गई है। सन 2007–08 में अखरोट उत्पादन 175 मी0 टन तथा उत्पादन क्षेत्र 365 हेक्टेयर था वहीं 2015–16 में इसका उत्पादन घटकर 78.62 मी0 टन तथा उत्पादन क्षेत्र 15.44 हेक्टेयर हो गया है **(तालिका 1.9)**।

**6.फलोत्पादन में प्रयोग होने वाली तकनीकियाँः**

विकासखण्ड रामगढ़ में फलोत्पादन में अनेक तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य बागवानी का विकास तथा फलोत्पादन में वृद्धि करना है। अध्ययन क्षेत्र में फलोत्पादन को बढावा देने के लिये कई कृषि तकनीकियों का प्रयोग किया जाता है, जैसे– कलम लगाना, छटाई करना, कर्षण, सिंचाई, खाद आदि।

**कर्षणः** कर्षण शब्द का प्रयोग यहाँ पर दो भिन्न कार्यों के लिए किया गया है एक तो उस छिछली और बार–बार की जाने वाली गुड़ाई या खुरपियाने के लिए जो घास–पात नष्ट करने के उद्देश्य से की जाती है और दूसरे उस गहरी जुताई के लिए जो प्रति वर्ष इसलिए की जाती है कि भूमि के नीचे घास–पात तथा जड़ें आदि दब जाएं। बागवानी में पौधों के जडों पर कर्षण कर पानी एकत्र करने के लिये छोटा सा गड्डा बना दिया जाता है जिससे पानी पौधों के जडों पर जमा हो जाता है। तरकारी और फूल की खेती में साधारणतः जुताई की बड़ी आवश्यकता रहती है। फलों के उद्यान में बिना कर्षण किए अच्छा उत्पादन प्राप्त नहीं किया जा सकता (**चित्र–1.2 A**)।

**चित्र 1.2: विकासखण्ड रामगढ़ में फलोत्पादन की तकनीकियाँ**

**कलम लगानाः** सर्वप्रथम विभिन्न प्रजाति के बीज बोकर नर्सरी बनाई जाती है। नर्सरी से उगे पौधों में उन्हें बट–जड़ग्राफ आदि करने के उपरान्त पौधों को कलमी बनाया जाता है। जिसके लिए एक ही व्यास के तने चुने जाते हैं (प्रायः 1/4 इंच से 1/2 इंच तक के) फिर दोनों को एक ही प्रकार से तिरछा काट दिया जाता है। कटान की लंबाई लगभग 1.5 इंच रहती है फिर दोनों को दृढ़ता से बाँधकर ऊपर से मोम चढ़ा दिया जाता है या कपड़ा बाँध दिया जाता है। तदोपरान्त अलग–अलग स्थानों में लगाया जाता है (**चित्र–1.2 B**)।

**सिंचाईः** सिंचाई फलोत्पादन की मूलभूत आवश्यकता है। अध्ययन क्षेत्र में पौधों की सिंचाई की जाती है जिससे अच्छा फलोत्पादन देखने को मिलता है। भिन्न–भिन्न प्रकार के पादपों को कितनी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है इसको निर्धारित करना एक कठिन कार्य है। किस पौधे को कितना पानी दिया जाए और कब दिया जाए यह इस पर निर्भर है कि कौन सा पौधा है और ऋतु क्या है? सभी पादपों के लिए भूमि को निरन्तर नम रहना चाहिए, फलों के भी समुचित विकास के लिए निरन्तर जल की आवश्यकता रहती है (**चित्र–1.2 C**)।

**छँटाईः** फलों के वृक्षों को साधारणतः कलश या पुष्पपात्र का रूप दिया जाता है और केन्द्रीय भाग को घना नहीं होने दिया जाता। छँटाई का उद्देश्य यह होता है कि पादप के प्रायः अनावश्यक विकसित भाग को विधिपूर्वक काट दिया जाता है जिससे बचा हुआ भाग तीव्र विकास एवं अधिक उत्पादन करता है और अधिक सुन्दर, पुष्ट और स्वस्थ हो जाता है (**चित्र–1.2 D**)।

**खादः** पादपों को उचित आहार मिलना फलोत्पादन की सबसे आधारभूत आवश्यकता है। उचित आहार के अभाव में पौधों का पूर्ण विकास नहीं हो पाता है तथा साथ ही पूर्ण विकसित फल भी पैदा नहीं हो पाते हैं। फलदार वृक्ष तथा तरकारी के पादपों को अन्य पादपों के समान ही अपनी वृद्धि तथा विकास के लिए कई प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है, जो साधारणतः पर्याप्त मात्रा में उपस्थित रहते हैं। विकासखण्ड रामगढ़ में फल वाले वृक्षों में जैविक खाद (गोबर) डाली जाती है जिससे वृक्षों को उचित पोषक तत्व मिल जाते हैं तथा अच्छा उत्पादन देखने को मिलता है।

**फलों का श्रेणीकरण एवं पैकेजिंगः**

**श्रेणीकरणः** तुड़ाई/कटाई के बाद फलों की छँटाई अत्यन्त आवश्यक होती है। खराब, खरोंच लगे हुए, क्षतिग्रस्त, कटे हुए फलों को स्वच्छ, बिना खरोंच व बिना कटे वाले फलों से अलग निकाल दिया जाता है। इसके उपरान्त फलों का श्रेणीकरण करना भी बहुत आवश्यक होता है। इससे उत्पादक फल उत्पाद की अच्छी कीमत प्राप्त कर सकता है। यह श्रेणीकरण फलों के आकार, आकृति, किस्म, प्रजाति, वजन, परिपक्वता के आधार पर की जाती है। फल उत्पादन को गुणवत्ता के आधार पर निम्न वर्गो में विभाजित किया जाता है–

**एक्स्ट्रा क्लासः** इस वर्ग में श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले किस्म के अनुसार आकृति, वर्ग (रंग) वाले, जन्मजात गठन को प्रभावित करने वाले आन्तरिक दोषों रहित फल होते हैं। इसमें फल सही ढ़ग से कतारबद्ध पैकेज में भरकर बंद कर दिए जाते हैं। पैंकिग में साज–सज्जा उत्कृष्ट होनी चाहिए। यह फल प्रथम कोटि का होता है तथा अन्य फलों की तुलना में प्रति किग्रा मूल्य अधिक होता है।

**क्लास –1:** यह उपरोक्त एक्स्ट्रा क्लास की भाँति ही होता है किन्तु इनकी गुणवत्ता एक्स्ट्रा क्लास से कम होती है। फलों की आकृति, रंग में कुछ दोष जो उसकी गुणवत्ता को प्रभावित न करते हो, को इस वर्ग में शामिल किया जाता है। किन्तु किसी भी दशा में उसकी खुबसूरती तथा पैंकिंग में साज–सज्जा कम नहीं होनी चाहिए। यह द्वितीय कोटि का उत्पाद होता है जिसका प्रति किग्रा मूल्य एक्स्ट्रा क्लास से कम तथा क्लास दो के फलों से अधिक होता है।

**क्लास –2:** इस वर्ग के फलों में कुछ बाहरी और आन्तरिक दोष होते हैं किन्तु फल ताजा और खाने योग्य होते हैं। यह वर्ग स्थानीय या कम दूरी रखने वाले बाजार के लिए उपयुक्त होता है। यह क्लास सबसे अन्तिम क्लास है तथा इसका प्रतिकिग्रा मूल्य तुलनात्मक रूप से कम होता है। इस तरह फल उत्पादन का श्रेणीकरण करने के उपरान्त पैंकिग की जाती है।

**फलों की पैंकेजिंगः** बागवानी से अधिक आाय अर्जित करने व उपभोक्ता को फल उपभोग हेतु आकर्षित करने के लिए फलों की आधुनिक पैकेजिंग की जाती है। फलों को सडने–गलने और उच्च आर्द्रता से बचाकर गद्दी लगे पात्रों या कागज को फलों पर लपेटकर, पॉलिवाइनिल क्लोराइड (पी0 वी0 सी0) संकुचन (ब्रिंक रैप) करने वाली फिल्म लपेट कर प्लास्टिक थैलो में बन्दकर, नालीदार बॉक्स में भरकर तथा रसायन लगी पैंकिग कर फलों को कुछ समय तक उपयोग हेतु रखा जा जाता है। यहाँ पर फलों को खराब होने से बचाने के लिए एक खुले कमरे में रख दिया जाता है जिससे कि फलों को शुद्ध हवा मिले और फल जल्दी खराब न हो। उसके बाद फल का श्रेणीकरण किया जाता है। फलों की पैकेजिंग के बाद फलों को परिवहन के माध्यम से हल्द्वानी मंडी तक पहुँचाया जाता है।

**फल उत्पादन व प्रसंस्करणः** फल शीघ्र नाशवान प्रकृति के होते हैं। भण्डार की उचित व्यवस्था एवं शीघ्र परिवहन साधनों के अभाव में फल उत्पादन का लगभग 20 से 25 प्रतिशत भाग नष्ट हो जाता है। फल उत्पादन की इस नष्ट होने वाली मात्रा को फल का प्रसंस्करण करके कम किया जा सकता है। फल प्रसंस्करण में फल उत्पाद से जैम, जैली, अचार, मुसब्बा, सिरक, चटनी (सोस) आदि प्रसंस्कृत उत्पाद बनाए जा सकते हैं। जिनका मूल्य एवं आयु दोनों ताजे फलों की अपेक्षा अधिक होते हैं। इन प्रंसस्कृत उत्पादों का परिवहन एवं विपणन भी आसान होता है। खाद्य प्रसंस्करण के द्वारा कृषकों को होने वाले नुकसान को कम किया जा सकता है तथा उनकी आय में बृद्धि तथा उनके जीवन स्तर को बढाया जा सकता है।

**7.अध्ययन क्षेत्र में फलोत्पादन की समस्याएंः**

विकासखण्ड रामगढ़ आज भी परम्परागत तरीके जैसे लकडी की पेटी, धान का पुआल, जूट के बोरों, बांस की टोकरी, कागज की रद्दी आदि असुरक्षित पैंकिग प्रयोग में लाई जाती है। यहाँ पर भण्डारण की भी उचित व्यवस्था नहीं है जिसमें कि फलों का उचित संरक्षण किया जा सके। अध्ययन क्षेत्र में फलोत्पादन की समस्याओं का निम्नलिखित बिन्दुओं में उल्लेखित किया गया है–

1. भौगोलिक स्वरूप एवं जलवायु के दृष्टिकोण से रामगढ़ विकासखण्ड की परिस्थितियाँ बागवानी के लिए उपयुक्त हैं परन्तु व्यावसायिक शिक्षा एवं पूँजी के अभाव में यहाँ की जनसंख्या आज भी परम्परागत कृषि कार्य में संलग्न है।
2. फलों को अनेक रोगों से बचाने के लिए आवश्यक कीटनाशकों का अभाव देखने को मिलता है जिससे फलों का उत्पादन करने में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।
3. सिंचाई के अभाव के कारण फलों के उत्पादन पर गहरा प्रभाव पड़ता है जिससे फलों के उत्पादन में कमी आ जाती है।
4. अध्ययन क्षेत्र में अभी भी आधुनिक पैंकेजिंग की कोई व्यवस्था नहीं है।
5. फल उत्पादन के क्षेत्र में वैज्ञानिक बागवानी और विपणन प्रबन्धन की व्यवस्था न होने के कारण फल उत्पादकों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है।
6. उन्नत किस्म के बीजों व पौधों की उपलब्धता न होना फलोंत्पादन की एक समस्या है। इसी असुविधा के चलते व्यक्ति फल उत्पादन में रूचि नही रखता है। पेड़ों के लिए अच्छी उर्वरक खाद की असुविधा होने के कारण भी फलोंत्पादन बाधित रहता है।
7. समुचित भण्डारण एवं परिवहन के अभाव में फल उत्पादकों को कई कठिनाइयों का सामना करना पडता है।
8. फल उत्पादन में जंगली जानवरों का बहुत आंतक देखने को मिलता है जो फलों को नष्ट कर देते हैं जिससे लोग फलों के उत्पादन में रूचि नहीं दिखाते हैं।

9. फलोत्पादको को फलोत्पादन में सहायक भौगोलिक दशाओं एवं उनके महत्व का सामान्यतः ज्ञान नहीं होता है इसका प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव फलोंत्पादन की दर में कमी के रूप में सामने आता है।
10. फल उत्पादन के अन्तर्गत कृषकों को सिर्फ 2–3 महीने ही काम मिल पाता है बाकी महीने वे बेरोजगार बैठे रहते हैं जिससे बेरोजगारी में वृद्धि होती है।
11. परिवहन की उचित व्यवस्था न होने के कारण फल समय रहते मंडी तक नहीं पहुँच पाते हैं जिससे फल उत्पादको को हानि देखने को मिलती है।
12. गरीबी व अशिक्षा के कारण उत्पादक को किस मूल्य में फल को बेचना चाहिए इसका उचित ज्ञान नही होता जिससे उत्पादक को फल उत्पादन में हानि का सामना करना पड़ता है।
13. अध्ययन क्षेत्र में एक भी प्रसंस्करण इकाई न होने के कारण यहाँ शीघ्र खराब होने वाली फलों के लिए कोई उचित व्यवस्था नहीं है।

## 8.संभावनाएं एवं सुझावः

अध्ययन क्षेत्र में फलोत्पादन की सम्भावनाओं को बढाने के लिये निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

1. रामगढ़ विकासखण्ड में क्षेत्र आधारित योजनाओं का निर्माण करके इस क्षेत्र में फलोत्पादन का अधिकाधिक विकास किया जा सकता है।
2. सरकार द्वारा फल उत्पादन को सीधे बागवानों से खरीदकर उनको बाजार तथा प्रसंस्करण केन्द्र तक पहुँचाना चाहिए तथा उसके बाद निर्मित उत्पादन का विक्रय करना चाहिए। इसका मुख्य लाभ बागवानों को फल उत्पादन का उचित मूल्य के रूप में प्राप्त होगा।
3. योजनाओं का लाभ प्राप्त करने हेतु निर्धारित की गई आवेदन प्रकिया में सरलीकरण की आवश्यकता है। आवेदन पत्र की स्वीकृति में सरकारी अधिकारियों को लाल फीताशाही से बचना चाहिए।
4. फलों के संग्रह/भण्ड़ारण के लिए उचित व्यवस्था की जानी चाहिए जिससें फलों की उचित देख–रेख हो सके तथा फलों की बर्बादी को कम किया जा सके।
5. सरकार द्वारा उत्तम किस्म के बीज तथा पौधे उपलब्ध कराने चाहिए जिससे अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सके।
6. सरकार द्वारा परिवहन की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे समय पर फलों को मंडी तक पहुँचाया जा सके तथा उत्पादक को अच्छा लाभ प्राप्त हो सके।
7. फल उत्पादकों को सम्बन्धित योजनाओं की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। परन्तु अशिक्षित समाज में यह समस्या जटिल हो जाती हैं। इसके लिए योंजनाओ से सम्बन्धित चार्ट, पोस्टर, डाक्यूमेण्टरी, साहित्य आदि का बागवानों के बीच निःशुल्क वितरण कराना चाहिए।
8. सरकारी योजनाओं के तहत फलोत्पादकों को कीटनाशकों का निःशुल्क वितरण करना चाहिए जिससे उत्पादक इन दवाइयों का प्रयोग करके फलों को नष्ट होने से बचा सकता है तथा फल उत्पादन को भी बढाया जा सकता है।
9. फलों की पैंकेजिंग के लिए परम्परागत तरीकों को छोडकर आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जाना चाहिए और इसके लिए सरकार को पैकेजिंग व्यवस्था को और मजबूत बनाने का प्रयास करना चाहिए।
10. यदि यहाँ पर फल प्रसंस्करण इकाई की स्थापना की जाये तो शीघ्र खराब होने वाले फलों का उचित उपयोग किया जा सकता है।
11. अध्ययन क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में सिंचाई की सुविधाऐं उपलब्ध नहीं है। सिंचाई सुविधाओं को बढाकर फलोत्पादन में वृद्धि की जा सकती है।
12. उन्नत किस्म के बीजों व पौधों की उपलब्धता से फलोत्पादन को अधिक बढाया जा सकता है।

## 9.निष्कर्षः

बागवानी कृषि की एक महत्वपूर्ण शाखा है तथा फलोत्पादन बागवानी की एक महत्वपूर्ण शाखा है। आधुनिक बैज्ञानिक तकनीक के द्वारा बागवानी का विकास पहले से बहुत अधिक बड़ गया है। अध्ययन क्षेत्र में फल उत्पादन हेतु उपयुक्त भौगोलिक एवं जलवायविक दशायें विद्यमान हैं। बागवानी यहाँ की अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने वाला मुख्य व्यवसाय है। फलों के निर्यात की पर्याप्त संभावनाओं के चलते पैंकेजिंग का विशेष महत्व है। अतः फलों के पैंकेजिंग के सम्बन्ध में फलोत्पादकों को आधुनिक विधियों से अवगत कराने की आवश्यकता है जिससे फलों का अच्छा उत्पादन किया जा सके तथा उत्पादकों को अधिक लाभ प्राप्त हो सके। फलों की प्रकृति शीघ्र नष्ट होने वाली होती है। अतः फलों के सुरक्षित भण्डारण की व्यवस्था का होना नितान्त आवश्यक है। इसके लिए शीत भण्डारण एवं प्रसंस्करण की आधुनिक सुविधा को ध्यान में रखा जाना चाहिए तथा प्रसंस्करण करके फलों को उपयोग में लाया जा सके। रामगढ़ की अर्थव्यवस्था में विभिन्न घटकों या उत्पादक क्षेत्रों के योगदान सम्बन्धी विश्लेषण से निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर घटक ग्रामीण अर्थव्यवस्था के निर्माण में प्रगतिशील भूमिका निभा रहे हैं तथा राज्य सरकार द्वारा भी इस दिशा में गंभीर प्रयास किये जा रहे हैं, किन्तु पर्वतीय क्षेत्रो पर और अधिक ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। फलों के उत्पादन के लिए बागवानी विकास की अपार सम्भावनायें विद्यमान है जिसको वैज्ञानिक प्रबन्धन, उच्च गुणवत्तायुक्त फल उत्पादन एवं मितव्ययी लागत प्रबन्धन से अधिक लाभदायक बनाया जा सकता है। इससे यहाँ के बागवानों की आर्थिकी को सुधारा जा सकता है तथा रामगढ़ की

अर्थव्यवस्था को गतिशीलता प्रदान की जा सकती है। यदि उद्यान अवस्थापना के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाओं का यहाँ विकास किया जाये तो भविष्य में फलोत्पादन इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बन सकता है।

## 10.ग्रन्थसूची


1. Prof. Lal S.N. and Dr. Lal S.K. (2018): Indian Economy: Survey and Analysis, Shibam Publication, Pg-4.29, 4.31.
2. Pant Sweta et al. (2019): Problems and Prospects of Dairy Farming in Almora District of Uttarakhand. Pg- 1-2.
3. तिवारी राम चन्द्र (2016): कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स इलाहाबाद,पृष्ट–290–323।
4. त्रिपाठी केसरी नन्दन (2014–15): उत्तराखण्ड एक समग्र अध्ययन, बौद्धिक प्रकाशन, पृष्ट– 149–164।
5. हुसैन मासिद (2014): भारत का भूगोल, एम0 सी0 ग्रा हिल पब्लिकेशन्स, पृष्ट– 9.1–9.61।
6. गर्ग, एच० एस०: (1995), "जनसंख्या भूगोल", प्रगति प्रकाशन मेरठ।
7. सिंह, सतनामः (2008), "कृषि भूगोल", यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन।
8. नवानी, लोकेश एवं रावत, सिंह कल्याण "(मैत्री)": (2014), "विनसर उत्तराखंड इयर बुक" विनसर।
9. हुसैन मासिद (2014): कृषि भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स।